॥ श्रीहरिः ॥

1845

प्रमुख आरतियाँ

गीताप्रेस, गोरखपुर

GITA PRESS, GORAKHPUR
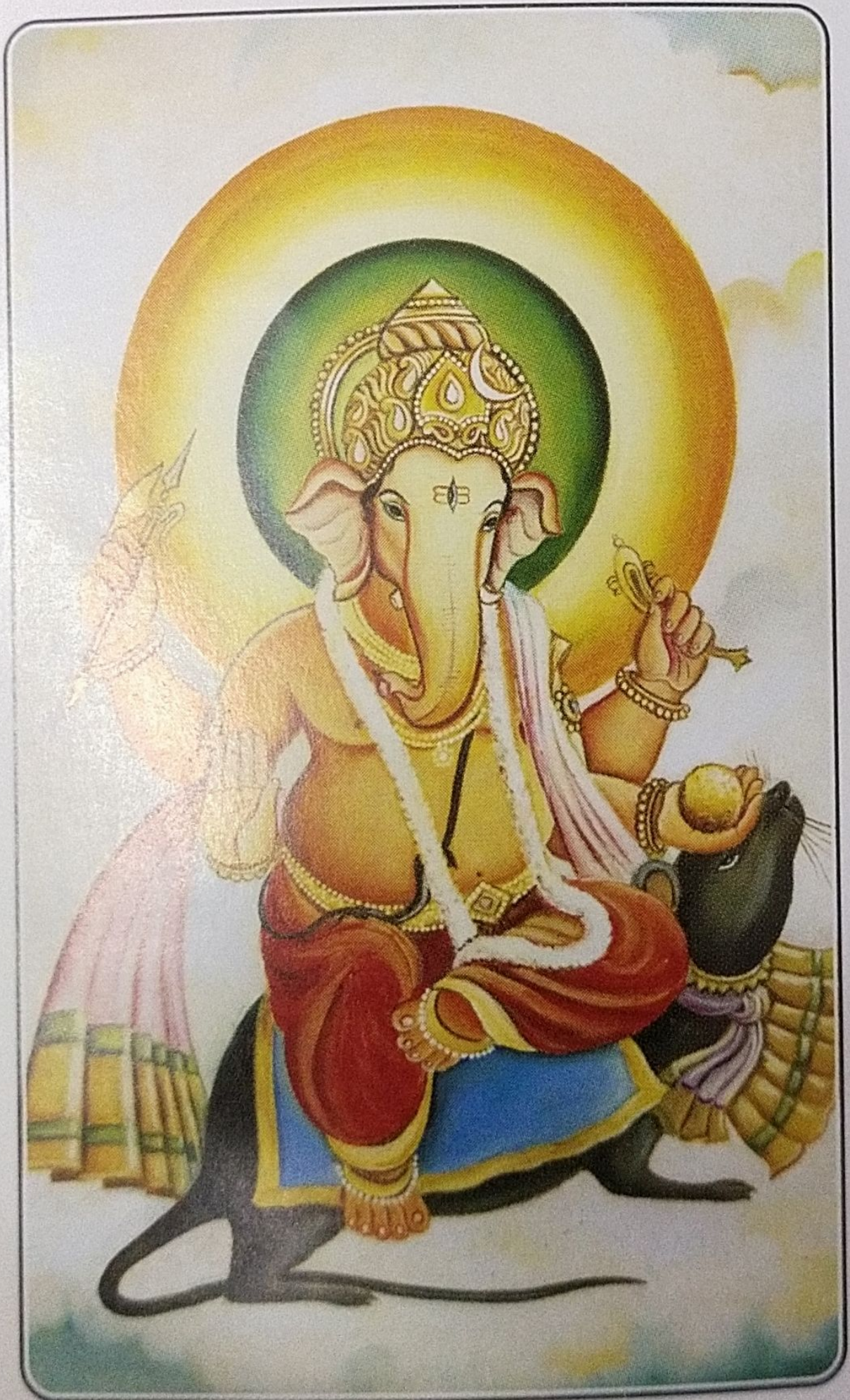
भगवान् श्रीगणेशजी

आरति गजवदन विनायककी।
सुर-मुनि-पूजित गणनायककी॥ टेक॥

एकदंत शशिभाल गजानन,
विघ्नविनाशक शुभगुण कानन,
शिवसुत वन्द्यमान-चतुरानन,
दुःखविनाशक सुखदायककी॥ सुर०॥

ऋद्धि-सिद्धि-स्वामी समर्थ अति,
विमल बुद्धि दाता सुविमल-मति,
अघ-वन-दहन, अमल अबिगत गति,
विद्या-विनय-विभव-दायककी॥ सुर०॥

पिङ्गलनयन, विशाल शुंडधर,
धूम्रवर्ण शुचि वज्रांकुश-कर,
लम्बोदर बाधा-विपत्ति-हर,
सुर-वन्दित सब विधि लायककी॥ सुर०॥

भगवान् जगदीश्वर

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु! जय जगदीश हरे॥
भक्तजनोंके संकट छिनमें दूर करे॥ ॐ० ॥
जो ध्यावै फल पावै, दुख विनसै मनका॥ प्रभु० ॥
सुख-सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तनका॥ ॐ० ॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी॥ प्रभु० ॥
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी॥ ॐ० ॥
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी॥ प्रभु० ॥
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥ ॐ० ॥
तुम करुणाके सागर तुम पालन-कर्ता॥ प्रभु० ॥
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥ ॐ० ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती॥ प्रभु० ॥
किस बिधि मिलूँ दयामय! मैं तुमको कुमती॥ ॐ० ॥
दीनबन्धु दुखहर्ता तुम ठाकुर मेरे॥ प्रभु० ॥
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे॥ ॐ० ॥
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा॥ प्रभु० ॥
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतनकी सेवा॥ ॐ० ॥
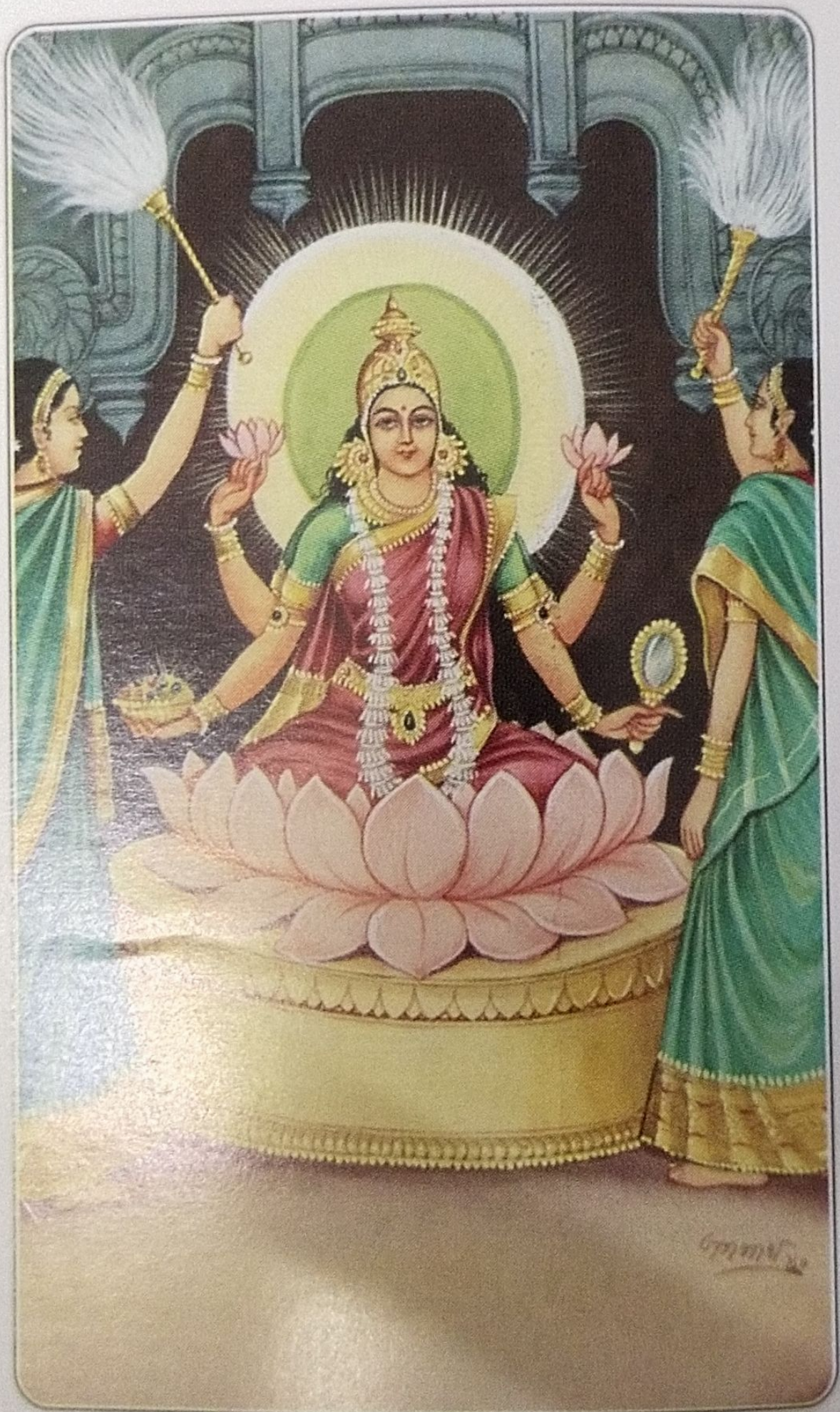
श्रीलक्ष्मीजी

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसिदिन सेवत हर-विष्णू-धाता॥ ॐ॥

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ ॐ॥

दुर्गारूप निरंजनि, सुख-सम्पति दाता।
जो कोइ तुमको ध्यावत, ऋधि-सिधि-धन पाता॥ ॐ॥

तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधिकी त्राता॥ ॐ॥

जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्‌गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता॥ ॐ॥

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।
खान-पानका वैभव सब तुमसे आता॥ ॐ॥

शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहिं पाता॥ ॐ॥

महालक्ष्मी (जी) की आरति, जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥ ॐ॥

भगवान् शिव

जय शिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा
॥ ॐ हर हर महादेव॥

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै।
हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजै॥ २॥ ॐ हर हर०
दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहै॥ ३॥ ॐ हर हर०
अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी॥ ४॥ ॐ हर हर०
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक गरुडादिक भूतादिक संगे॥ ५॥ ॐ हर हर०
कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र शूलधारी।
सुखकारी दुखहारी जग-पालनकारी॥ ६॥ ॐ हर हर०
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षरमें शोभित ये तीनों एका॥ ७॥ ॐ हर हर०
त्रिगुणस्वामिकी आरति जो कोइ नर गावै।
भनत शिवानन्द स्वामी मनवाञ्छित पावै॥ ८॥ ॐ हर हर०

भगवान् श्रीजानकीनाथ

जय जानकिनाथा, जय श्रीरघुनाथा।
दोउ कर जोरें बिनवौं प्रभु! सुनिये बाता॥ टेक ॥

तुम रघुनाथ हमारे प्रान, पिता-माता।
तुम ही सज्जन-संगी भक्ति-मुक्ति-दाता॥ जय० ॥

लख चौरासी काटो मेटो यम-त्रासा।
निसिदिन प्रभु मोहि राखिये अपने ही पासा॥ जय० ॥

राम भरत लछिमन सँग शत्रुहन भैया।
जगमग ज्योति विराजै, सोभा अति लहिया॥ जय० ॥

हनुमत नाद बजावत; नेवर झमकाता।
स्वर्णथाल कर आरती कौसल्या माता॥ जय० ॥

सुभग मुकुट सिर, धनु कर सोभा भारी।
मनीराम दर्शन करि पल-पल बलिहारी॥ जय० ॥

भगवान् कुंजबिहारी

आरती कुंजबिहारीकी। श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी॥ (टेक)
गलेमें बैजंतीमाला, बजावै मुरलि मधुर बाला।
श्रवनमें कुण्डल झलकाला, नंदके आनँद नँदलाला॥ श्रीगिरधर०॥
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली,
लतनमें ठाढ़े बनमाली,
भ्रमर-सी अलक, कस्तूरी-तिलक, चंद्र-सी झलक,
ललित छबि स्यामा प्यारीकी। श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी॥
कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दरसनको तरसै,
गगन सों सुमन रासि बरसै,
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिनी संग,
अतुल रति गोपकुमारीकी। श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी॥
जहाँ ते प्रगट भई गंगा, सकल-मल-हारिणि श्रीगंगा,
स्मरन ते होत मोह-भंगा,
बसी सिव सीस, जटाके बीच, हरै अघ कीच,
चरन छबि श्रीबनवारीकी। श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी॥
चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही बृन्दाबन बेनू,
चहूँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू,
हँसत मृदु मंद, चाँदनी चंद, कटत भव-फंद,
टेर सुनु दीन दुखारीकी। श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी॥
आरती कुंजबिहारीकी। श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी॥

श्रीराधाजी

आरति श्रीवृषभानुसुताकी।
मंजु मूर्ति मोहन-ममताकी ॥ टेक ॥

त्रिविध तापयुत संसृति नाशिनि,
विमल विवेकविराग विकासिनि,
पावन प्रभु-पद-प्रीति प्रकाशिनि,
सुन्दरतम छबि सुन्दरताकी ॥ १ ॥

मुनि-मन-मोहन मोहन-मोहनि,
मधुर मनोहर मूरति सोहनि,
अविरलप्रेम-अमिय-रस-दोहनि,
प्रिय अति सदा सखी ललिताकी ॥ २ ॥

संतत सेव्य संत-मुनि-जनकी,
आकर अमित दिव्यगुन-गनकी,
आकर्षिणी कृष्ण-तन-मनकी,
अति अमूल्य सम्पति समताकी ॥ ३ ॥

कृष्णात्मिका, कृष्ण-सहचारिणि,
चिन्मयवृन्दा-विपिन-विहारिणि,
जगज्जननि जग-दुःखनिवारिणि,
आदि अनादि शक्ति विभुताकी ॥ ४ ॥
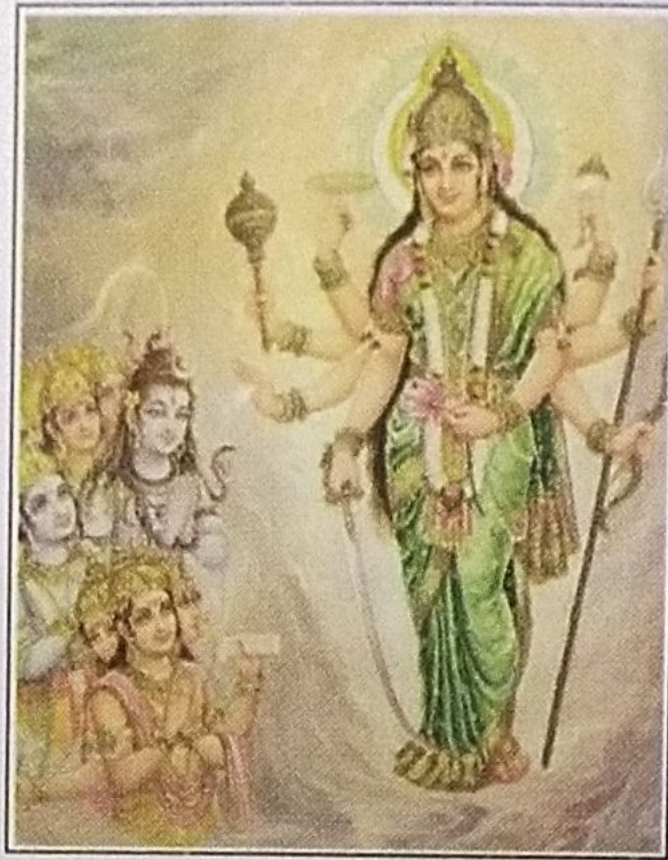
श्रीअम्बाजी

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री ॥ १ ॥ जय अम्बे०
माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वलसे दोउ नैना, चंद्रवदन नीको ॥ २ ॥ जय अम्बे०
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठनपर साजै ॥ ३ ॥ जय अम्बे०
केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी ॥ ४ ॥ जय अम्बे०

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चंद्र दिवाकर सम राजत ज्योती ॥ ५ ॥ जय अम्बे०
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती।
धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती ॥ ६ ॥ जय अम्बे०
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥ ७ ॥ जय अम्बे०
ब्रह्माणी, रुद्राणी तुम कमलारानी।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ ८ ॥ जय अम्बे०
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ।
बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू ॥ ९ ॥ जय अम्बे०
तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता।
भक्तनकी दुख हरता सुख सम्पति करता ॥ १० ॥ जय अम्बे०
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी ॥ ११ ॥ जय अम्बे०
कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती।
(श्री) मालकेतुमें राजत कोटिरतन ज्योती ॥ १२ ॥ जय अम्बे०
(श्री) अम्बेजीकी आरति जो कोइ नर गावै।
कहत शिवानँद स्वामी, सुख सम्पति पावै ॥ १३ ॥ जय अम्बे०

माँ सरस्वतीजी

जय सरस्वती माता, मैया जय सरस्वती माता।
सद्‌गुण, वैभवशालिनि, त्रिभुवन विख्याता॥ जय०॥

चन्द्रवदनि, पद्मासिनि द्युति मंगलकारी।
सोहे हंस-सवारी, अतुल तेजधारी॥ जय०॥

बायें कर में वीणा, दूजे कर माला।
शीश मुकुट-मणि सोहे, गले मोतियन माला॥ जय०॥

देव शरण में आये, उनका उद्धार किया।
पैठि मंथरा दासी, असुर-संहार किया॥ जय०॥

वेद-ज्ञान-प्रदायिनि, बुद्धि-प्रकाश करो।
मोहाज्ञान तिमिर का सत्वर नाश करो॥ जय०॥

धूप-दीप-फल-मेवा—पूजा स्वीकार करो।
ज्ञान-चक्षु दे माता, सब गुण-ज्ञान भरो॥ जय०॥

माँ सरस्वती की आरती, जो कोई जन गावे।
हितकारी, सुखकारी ज्ञान-भक्ति पावे॥ जय०॥